International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 110-111

संत निश्चल दास के साहित्य में गुरु का महत्व

डॉ0 रवि दहिया

प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, हिन्दू कॉलेज, सोनीपत, हरयाणा भारत।

प्रस्तावना

गुरु हिन्दू धर्म में एक व्यक्तिगत आध्यत्मिक शिक्षक या निर्देशक होते हैं जिन्होंने आध्यात्मिक अन्तदृष्टि प्राप्त कर ली। भारतीय संस्कृति और दर्शन की परम्परा से गृहीत भारतीय वाडमय में गुरु को ब्रह्म से भी अधिक महत्व प्रदान किया गया है। गुरु को प्रेरक, प्रथम अभ्यास देने वाला, सच्ची लौ जगाने वाला और कुशल आखेटक कहा गया है जो अपने शिष्य को उपदेशो के बाणों से बिंध कर उसमें प्रेम की पीर संचरित कर देता है। 'गुरु' शब्द में 'गु' का अर्थ है अंधकार और 'रु' का अर्थ है प्रकाश अर्थात् गुरु का शब्दिक अर्थ हुआ अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक। सही अर्थ में गुरु वही है जो अपने शिष्यों का मार्गदर्शन करे और जो उचित हो उस ओर शिष्य को आगे बढाने के लिए प्रेरित करे। लोक मान्यतानुसार प्रत्येक साधक के लिए गुरु की अनिवार्यता इसलिए भी है क्योंकि वह अपनी आध्यत्मिक साधना में कोई भी विध्न उपस्थित होने पर गुरु से मार्ग निर्देश प्राप्त कर सके। साधक एक यात्री की भांति होता है जो लक्ष्य की ओर बढ़ने की लालसा तो रखता है किन्तु चूंकि वह लक्ष्य को नहीं देख सकता है (देखा होता है) इसलिए उसे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है, जो स्वंय न केवल मार्ग को देखे हो, वरन अच्छी तरह लक्ष्य को भी पहचनाता हो। गुरु की प्राप्ति द्वारा साधक के ह्दय में संशय व आशंका की भावनाएं समाप्त हो जाती है। उसे साधक मार्ग में एक मददगार अर्थात सहायक मिल जाता है जो उसे विध्नों और बाधाओं से परे निकाल सकता है उसके साधना में निराश होने पर उसमें आत्मविश्वास जगाकर आगे बढ़ा सकता है अथवा आगे बढने की प्रेरणा दे सकता है गुरु का योग्य होना उतना ही आवश्यक है जितना शिष्य का यदि गुरु स्वंय ही अयोग्य होगा तो वह शिष्य को ही ले उतना ही आवश्यक है जितना शिष्य का यदि गुरु स्वंय ही अयोग्य होगा तो वह शिष्य को ही ले डूबेगा। गुरु की सेवा में शिष्य को भी भी सर्वात्मना समर्पित को हो जाना चाहिए। गुरु की असीम कृपा शिष्य पर होती है। वस्तुतः वह ब्रह्म की कृपा पर उतना ही आश्रित रहता जितना गुरु की। वस्तुतः सत्य दिखाने वाला परमात्मा का ही उसके अनंत दिव्य गुणों के कारण असंख्य नामों में से एक नाम गुरु भी है। इसलिए भारतीय संत साहित्य में कहा जाता है कि गुरु और गोविन्द में कोई फर्क नहीं है।

कबीर तो ईश्वर से भी बड़ा मानते हैं और एक स्थान पर कहते हैं –

'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काको लागू पाय?
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दिए बताय।।'

सम्पूर्ण हिंदी संत साहित्य में गुरु का विशेष स्थान बताया है और संतों की इस लम्बी कतार में, कबीर, रैदास, दादूदयाल निश्चल दास आदि संत कवि हुए जिन्होंने अपने साहित्य में गुरु की ब्रह्म से भी बढ़कर बताया है। गुरु की महता को संत दादूदयाल जी कहते हैं कि यह तो सद्गुरु की ही कृपा है कि जिससे मुझे दयाल ईश्वर के दर्शन हो पाए हैं।

दादू सद्गुरु सहज में, कीया बहु उपकार
निर्धान अनवॅत कर लिया, गुरु मिलिया दातार।
'दादू देशू दयाल की, गुरु दिखाई बाट।
तला कूंची लाई करी, पोले सबै कपाट।'[2]

संत निश्चलदास की गुरु की महता को स्वीकार करते हैं और अपने गुरु दादू दयाल की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हैं। इतना ही नहीं सम्पूर्ण विचार सागर ग्रन्थ दादू जी को अर्पण है प्रथम तरंग के मंत में उन्होंने लिखा है

'जो जन प्रथम तरंग यह, पढ़ै ताहि तत्काल
करहु मुक्त गुरु मूर्ति हवै, दादू दीन दयाल।'[3]

निश्चलदास जी ने लिखा है कि जो लोग इस प्रथम तरंग को पढते हैं, दादू जी दीन दयालों पर दया करके गुरु रुप होकर उन्हें इन सांसारिक मोह माया से मुक्त करते हैं।

संत निश्चलदास ने विचार सागर तृतीय तरंग, गुरु, भक्ति, फल, निरुपणम् में कहा है कि जो पुरुष ज्ञान सहित गुरु से पढ़ता है अथवा एकाग्र चित करके सुनेख वह पुरुष मोक्ष को पंथ जो ज्ञान है उसको प्राप्त करता है?

'पेशि च्यारि अनुबंध युत, पढ़ै सुनै यह ग्रंथ।
ज्ञान सहित गुरु सैं जु नर, लहै मोछ को पंथ।।[4]

इतना ही नहीं वे ईश्वर से भी अधिक गुरु की भक्ति पर बल देते हैं और कहते गुरु के उपदेश के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती–

ईश्वर तैं गुरु मैं अधिक, धारै भक्ति सुजान।
बिन गुरु भक्ति प्रवीन हूँ, लहै न आतम ज्ञान।।[5]

संत मत वालों ने उपासना का मार्ग बताने वाला एक मात्र गुरु को माना है। गुरु का महात्मय इनमें इतना अधिक है जो पंथें का नाम आदिगुरु के नाम पर चलता है। आगे चलकर फिर कोई विशेष आचार पर ध्यान देने वाला नया गुरु हो जाता है तो एक पंथ से दूसरा पंथ फूट निकलता है। संत निश्चलदास जी ने गुरु सेवा के दो फल बताये हैं।

एक तो गुरु की प्रसन्नता और दूसरा अंतःकरण की शुद्धता। संत निश्चलदास का कहना है कि सद्गुरु की कथनी को जो शिष्य अपने जीवन में नहीं उतारता है तो समझिए की वह काल के पास जा रहा है जो साधक सच्चे दिल से स्वीकारता है वह बिना किसी भय के अमर पद को प्राप्त करता है। अर्थात् उसका कल्याण होता है।

मन में प्रेमराम सम राशै। हौ प्रसन्न गुरु हम अभिलाशै
दोष दृष्टि सुपनै नहिं आनै। हरि हर ब्रह्म गंग रवि जानैं

गुरु मुरति को हिय मैं ध्याना। धारै जो चाहे कल्याना।।[6]

संत निश्चलदास जी महाराज जैसे कहते वैसे ही करके बता देते थे ये उनके जीवन में घटित घटना के आधार पर यथार्थ कथन है कि एक दिन एक अल्पमति किन्तु परम श्रद्धालु ने पंडित प्रवर निश्चल दास जी महाराज से प्रश्न किया कि'' आपने

'दादू दीन दयाल जू, सत सुख परम प्रकाश।
जा मैं मति की गति नहीं, सांई निश्चलदास।।[7]

विचार सागर के इस दोहे में अपने को दादू रुप बताया किन्तु आप दादू जी के स्वरुप को समान तो नहीं दिखते दादू जी का जैसा शरीर था, वैसा तो आपका नहीं है।''
उसकी उक्त शंका सुनकर निश्चल दास जी महाराज ने सोचा यह विचारशील न होने पर श्रद्धालु अवश्य है। इसे शास्त्र से न समझा कर प्रत्यक्ष दिखा देना ही अच्छा होगा। फिर बोले– 'मैंने ठीक ही कहा है तुम अपने मन को एकाग्र करके मेरी ओर देखो। 'फिर उसने अपने मन को एकाग्र करके ज्यों ही देखा तो पंडित जी उसे साक्षात दादू जी के रुप में ही दिख पडे थे। कहा भी है–

ज्ञानी जैसा कहता है, वैसा कर बतलाया।
निश्चल दादू रुप में, लख कर अति हर्शाया।।[8]

अतः स्वामी निश्चलदास जी को ऐसे गुरु की आवश्यकता है जो उन्हें परमात्मादेव का साक्षात्कार, और अभेद ज्ञान करा सके तथा उनकी तुलना में निश्चल दास जी के सन्यास गुरु तथा विद्या गुरु पीछे रह गए। वे दादू की वाणी को वेद और दादू जी को ब्रहम रुप मानते थे। उनकी वाणी से भ्रम का नाश होकर, उनको ब्रह्म का स्वंय से अभेद–अपरोक्ष ज्ञान प्राप्त हुआ था।
उन्होंने कहा –

ब्रह्म रुप अहि ब्रहावित, ताकी वाणी वेद
भाषा अथवा संस्कृत, करत भेद भ्रम छेद।[9]

निश्चलदास जी ऐसे गुरु की तलाश में थे जिस गुरु की वाणी को वेद के समान सत्य हो सत्य वेद गुरु वाक्य है श्रद्धा अस विश्वास। निश्चल दास जी को सद्गुरु के रुप में दादू जी मिले जो जिस अपरोक्ष ज्ञान की तलाश में थे वे उन्हें दादूवाणी में मिल गया और श्री दादू जी में निश्चलदास जी की परम गुरु के रुप में अचल श्रद्धा और भक्ति थी।

संदर्भ ग्रंथ

1. कबीर दास के दोहे – हिन्दुकुंम.काम
2. 'दादू ग्रंथावली' सम्पादक डॉ0 बलदेव वंशी पृष्ठ–11
3. संत स्वामी निश्चलदास जी कृत 'विचारसागर' सम्पादित सूरतदास दादू पृष्ठ–20
4. संत स्वामी निश्चलदास जी कृत 'विचारसागर' सम्पादित सूरतदास दादू पृष्ठ–63
5. संत स्वामी निश्चलदास जी कृत 'विचारसागर' सम्पादित सूरतदास दादू पृष्ठ–65
6. संत स्वामी निश्चलदास जी कृत 'विचारसागर' सम्पादित सूरतदास दादू पृष्ठ–69
7. संत निश्चलकृत विचार सागर परिशिष्ठ क–10
8. संत निश्चलकृत विचार सागर परिशिष्ठ क–10
9. संत स्वामी निश्चलदास जी कृत 'विचारसागर' सम्पादित सूरत दास दादू पृष्ठ–68